दादा भगवान परिवार का

अक्टूबर२०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

माँ... माँगू हूँ एक ज वरदान...
व्यवहार में शुद्धि रे...

माँ अंबा

संपादकीय

मित्रों,

यदि राजा के किसी मित्र को कोई मुसीबत आ पड़े तो वह सबसे पहले किसके पास जाएगा? राजा के पास। सही है न? और राजा उसकी मदद भी करेगा। लेकिन यदि मित्र राजा को नाराज़ कर दे, तो क्या राजा मदद करेगा? यदि मित्र को राजा से फ्रेन्डशिप टिकाकर रखनी हो तो उसे फ्रेन्डशिप के रूल्स का पालन करना चाहिए। हमने कई बार मंदिर में अंबा माँ के दर्शन किए होंगे और माँ हम पर प्रसन्न हो उस के लिए प्रार्थना भी की होगी। अंबा माँ को प्रसन्न करने के लिए उनके कौन से नियमों का पालन करना चाहिए?

इस अंक में मज़ेदार कहानियों द्वारा उन नियमों के बारे में विस्तार से समझ प्राप्त करेंगे। और यह भी जानेंगे कि दादाश्री और नीरू माँ का अंबा माँ के साथ क्या कनेक्शन है? नवरात्रि का त्यौहार क्यों मनाया जाता है? ऐसी और भी कई इंट्रेस्टिंग बातों का खजाना इस अंक में डिस्कवर करेंगे। तो चलो, इस अक्टूबर महीने में अंबा माँ के रंग में रंग जाएँ!

-डिम्पलभाई मेहता

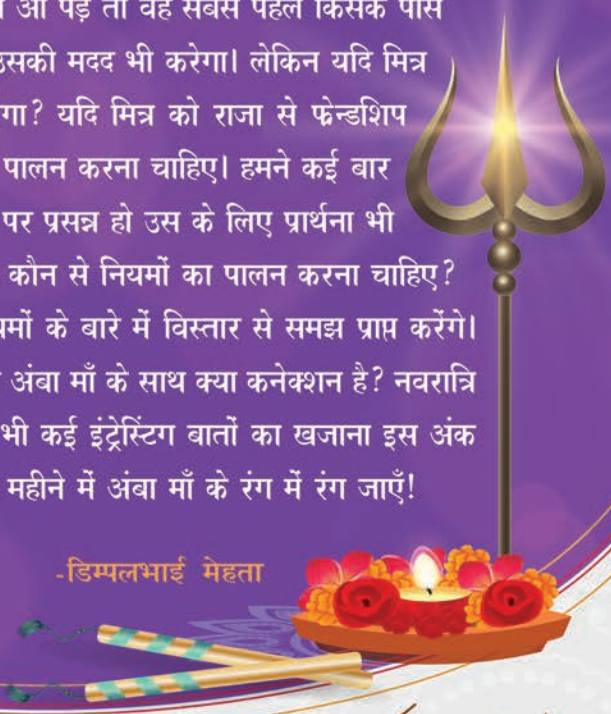

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ११ अंक : ६
अखंड क्रमांक : १०३
अक्टूबर २०२१

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

ज्ञानी कहते हैं...

प्रत्येक देवी माँ के कुछ नियम होते हैं। यदि हम उन नियमों का पालन करते हैं तो देवी माँ हम पर प्रसन्न रहती हैं।

प्रश्नकर्ता : अंबा माँ के क्या नियम हैं? किस तरह हम उनका पालन करें?

पूज्यश्री : अंबा माँ क्या कहती हैं? सहजता रखो। सहज मिला सो दूध बराबर, माँग लिया सो पानी और झगड़ा करके लिया, खींच लिया, वह सब रक्त के बराबर हो गया। जो सहज रूप से मिले उसी में आनंद मनाओ । सहज रूप से मिले उसका लाभ उठाओ और कहीं पर भी दख़ल मत करो।

प्रश्नकर्ता : दख़ल मतलब?

पूज्यश्री : इसे क्यों दिया? मुझे क्यों नहीं दिया? "तुम ऐसी हो, वैसी हो", ऐसा मम्मी के साथ करते हैं, उसे क्या कहेंगे? ये दख़ल ही है। और अगर हम ऐसे दख़ल करते हैं तो देवी माँ प्रसन्न नहीं होती हैं। जो सहज रूप से मिल जाए, वह खाएँ, पिएँ और खुश रहें। नहीं मिला तो क्लेश नहीं करना चाहिए। अगर किसी दिन नापसंद खाना मिले तो थोड़ा सा खा लेना चाहिए। जैसे कि, मम्मी ने दाल-चावल बनाए हों, और यदि ऐसा लगे कि, "मुझे नहीं खाना है।" तो ऐसा नहीं करना चाहिए। जो भी बनाया हो वह सब थोड़ा-थोड़ा खा लेना चाहिए। सहज भाव से रहना चाहिए। अगर हम दख़ल नहीं करते हैं तो देवी माँ प्रसन्न रहती हैं।

देवी माँ की भक्ति करने से हमारी प्रकृति सहज होती जाती है।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति सहज होना यानी क्या?

पूज्यश्री : प्रकृति सहज होना यानी क्या, कि दख़ल रहित होना। हर परिस्थिति में एडजस्टमेंट ले पाना। जो जैसा मिला उसमें एडजस्ट हो जाना। दुःखी नहीं होना। दूध में शक्कर की तरह घुल जाना। कंकड़ तो खड़खड़ करता है, इसलिए लोग उसे निकालकर फेंक देते हैं। हमें कंकड़ जैसा नहीं बनना है। शक्कर जैसा बनना है।

सभी धर्मों ने अंबा
माँ को समान रूप
से स्वीकार किया है।

यह तो नई

बाहर के संयोग चाहे कैसे भी हों,
कुछ भी हो जाए फिर भी जब
अंदर असहजता न हो,
सहजता रहे तब समझना
कि आपने देवी माँ को रिझाया है,
प्रसन्न किया है,
दैवी शक्ति प्रकट की है।

हमने (दादश्री) कभी भी अंबा माँ, लक्ष्मी जी और सरस्वती देवी के नियम भंग नहीं किए हैं। हम हमेशा उनके नियम में ही रहते हैं। इसलिए ये तीनों देवियाँ हमेशा हम पर प्रसन्न रहती हैं!

ही बात है!

हम (दादाश्री) अंबा माँ के इकलौते लाल हैं। देवी माँ के पास यदि आप हमारी (दादाश्री की)चिट्ठी लेकर जाओगे तो वे स्वीकार करती हैं।

बंकु दे बुकवॉर्म

बंकु रिया रिकी

बंकु के फेन्ड्स रिकी और रिया बंकु को "बुकवॉर्म बंकु" कहते हैं। पता है क्यों? क्योंकि वह सारे दिन अपने रूम में बैठकर कुछ न कुछ पढ़ता ही रहता है। रिकी और रिया बंकु से उल्टे-सीधे सवाल पूछकर उसे परेशान करते रहते हैं... लेकिन क्या बंकु सच में परेशान होता है? चलो, देखते हैं...

आज नवरात्रि का पहला दिन है। रिकी और रिया तैयार होकर गरबा खेलने जा रहे हैं। वे बंकु को बुलाने जाते हैं। बंकु तो घर के सादे कपड़े पहनकर बैठा था।

बंकु, आज से नवरात्रि शुरू हो रही है। नौ दिन का त्यौहार है। इस बार तो हम गरबा खेलकर प्राइज़ जीतने वाले हैं।

नवरात्रि नहीं, 'नई रात्रि'!

न-व-रा-त्रि.... कहते हैं।

नहीं। हमारे हिन्दुस्तान में एक ज़माना ऐसा था कि बरसात के दिनों में मच्छर पैदा हो जाते थे। जिससे मलेरिया बुखार हो जाता था। उस बुखार में कई लोगों की मृत्यु हो जाती थी।

ओह...

जितने लोग बच जाते वे 'नई-रात्रि' मनाते थे। वे मरने वाले थे, लेकिन बच गए इसलिए मनाते थे। वे देवी माँ की आरती व भक्ति करते। इसलिए 'नव-रात्रि' वास्तव में 'नव-रात्रि' थी। खराब टाइम गया और अब अच्छे दिन शुरू हुए।

तो अच्छे दिन शुरू हुए इसलिए देवी माँ से 'थैंक यू' कहने के लिए आरती करते हैं सभी?

उनकी भक्ति करने से सहजता आती है, जीवन अच्छा बीतता है। इतना ही नहीं, बल्कि आरती करने से फेसबुक, टी.वी., मूवी, इंटरनेट के कारण बिगड़ा हुआ चित्त शुद्ध हो जाता है।

रिकी, देवी माँ की भक्ति हो और चित्त शुद्ध हो जाए उसके लिए हम गरबा खेलकर बड़ा प्राइज जीतेंगे।

हाँ, ज़रूर। बंकु, तू भी तैयार हो जा, सिर्फ पढ़ने से ही फायदा नहीं होता। गरबा भी खेलना पड़ता है!

रिकी, रिया और बंकु तो देवी माँ की सच्ची भक्ति करके गरबा में झूमने के लिए तैयार हो गए, और आप?

सहज मिला सो दूध बराबर

बहुत साल पहले की यह बात है। तब जर्मनी में अकाल पड़ा था। गरीब लोगों के पास खाने के लिए अनाज नहीं था। एक सज्जन थे, उनको बच्चों से बहुत प्यार था। उन्होंने बीस बच्चों को बुलाकर कहा, "इस बास्केट में तुम सभी के लिए एक-एक पावरोटी रखी है। वह ले जाओ और कल फिर लेने आना। जब तक अकाल है तब तक आपको रोज़ यहाँ से पावरोटी मिलेगी।"

बच्चे तो बास्केट पर टूट पड़े। सभी को सब से बड़ी पावरोटी चाहिए थी। कुछ मिनट तक बच्चों ने एक-दूसरे के साथ बड़ी पावरोटी लेने के लिए खींचा-तानी की। झगड़ा करने में सभी इतने तल्लीन हो गए थे कि उन दयालु व्यक्ति को थैंक यू कहना ही भूल गए। और अंत में सभी अपनी पावरोटी लेकर चले गए।

ग्रेचेन नाम की एक छोटी सी लड़की कोने में खड़ी थी। सभी के जाने के बाद वह मुस्कुराते हुए आई और सब से अंत में बची हुई छोटी सी पावरोटी लेकर, उन सज्जन को दिल से थैंक यू कहकर चली गई।

दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। कोई धक्का-मुक्की किए बिना सब से आखिरी में बची हुई छोटी सी पावरोटी लेकर ग्रेचेन घर गई। ग्रेचेन के पावरोटी की साइज़ अन्य बच्चों की पावरोटी की साइज़ से आधी थी।

घर में जब ग्रेचेन की मम्मी ने पावरोटी के टुकड़े किए तो उसमें से छः चाँदी के सिक्के निकले।

"ओह, ग्रेचेन जल्दी जाकर अंकल को सिक्के वापस दे आ। यह तो अपने नहीं हैं।" मम्मी ने ग्रेचेन को सज्जन के पास भेजा।

ग्रेचेन सिक्के वापस देने के लिए उन सज्जन के पास दौड़ती हुई गई और कहा, "अंकल, कुछ भूल हो गई है। यह सिक्के हमारे नहीं हैं।"

सज्जन ने प्रेम से कहा, "कोई भूल नहीं हुई है। इन सिक्कों को मैंने खास तौर पर तुम्हारे लिए सब से छोटी पावरोटी में बेक करवाए थे। तुमने अन्य बच्चों की तरह बड़ी पावरोटी के लिए खींचा-तानी नहीं की, बल्कि सहज रहकर छोटी पावरोटी में ही संतोष किया। उसका ही यह इनाम है।"

मित्रों, कहते हैं न कि "सहज मिला सो दूध बराबर, माँग लिया सो पानी और खींच लिया सो रक्त बराबर..." ग्रेचेन ने ना ही किसी से बड़ी पावरोटी माँगी और ना ही किसी के पास से खींच कर ली। उसने सहज रहने का बड़ा इनाम प्राप्त किया। सहज रहने से जो आनंद मिलता है वह ज़िद करके किसी चीज़ को प्राप्त करने के आनंद से अनेक गुना ज्यादा होता है। क्या आपको विश्वास नहीं हो रहा है? तो फिर सहज रहने का प्रयोग करके देखो आनंद का अनुभव होगा।

मीठी यादें...

कई साल पहले की बात है। मैं मुंबई से नीरू माँ के साथ टेम्पो ट्रैवलर में सूरत मंदिर जाने के लिए निकला। सूरत के आसपास रहने वाले सभी महात्मा भी नीरू माँ के साथ मंदिर आने के लिए जॉइन हुए। सूरत मंदिर में जाने का कारण यह था कि एक महात्मा भाई को दैवी संकेत मिला था कि जगत् के अंतराय और विघ्न दूर हों और बहुत से लोग दादा का ज्ञान प्राप्त करें, उसके लिए नीरू माँ हर पूर्णिमा के दिन सीमंधर स्वामी की भक्ति करें।

हम सभी ने रात को मंदिर में नीरू माँ के साथ सीमंधर स्वामी भगवान के सामने बैठकर लगभग दो घंटे तक भक्ति की। फिर नीरू माँ ने भगवान के पैर छुए। जब लौटते समय हम मंदिर की सीढ़ियाँ उतर रहे थे तब मैंने नीरू माँ से एक प्रश्न पूछा कि, "नीरू माँ, यह आपने अभी सीमंधर स्वामी के दर्शन किए, यहाँ भक्ति की, तो क्या कोई देवी-देवता यहाँ आते हैं?"

नीरू माँ ने कहा कि, "हाँ, क्यों नहीं आते। आते ही हैं। यहाँ होते ही हैं!"

मैंने नीरू माँ से दूसरा प्रश्न पूछा, "नीरू माँ, जब हम लोग भक्ति कर रहे थे तब कोई देवी-देवता हाज़िर थे?"

नीरू माँ एक मिनट पॉज़ लेकर कहते हैं, "हाँ, थे ना। बहुत सारे देवी-देवता थे।"

मैं आश्चर्यचकित रह गया। "क्या बात कर रहे हैं, नीरू माँ! आपको दिखाई देता है कि देवी-देवता कहाँ बैठे हैं?!"

नीरू माँ ने भगवान के सामने देखते हुए कहा, "हाँ, हमें दिखाई देता है। कौन से देवी-देवता आए हैं, क्या कर रहे हैं, कहाँ बैठे हैं। यह सब हमें दिखता है।"

मुझे तो बहुत ही आश्चर्य हुआ, "क्या बात कर रहे हैं नीरू माँ, आपको इन आँखों से दिखता है? अभी कौन से देवी-देवता आए थे? कौन सी जगह पर बैठे थे?"

नीरू माँ ने सहजता से कहा, "भगवान के बाईं ओर ऊपर के भाग में अंबा माँ बैठे थे, दाईं ओर नीचे के भाग में पार्श्वयक्ष बैठे थे।" दूसरे और भी तीन-चार देवी-देवता के नाम बताए। और फिर, धीरे से सीढ़ियाँ उतरने लगे।

मुझे लगा, "ओहोहो, यह कैसे नीरू माँ मेरे साथ हैं! सभी देवी-देवता को पहचानते हैं, उन्हें देख भी सकते हैं। और वे नीरू माँ चौबीस घंटे मेरे साथ हैं। नीरू माँ को एक-एक चीज़ आरपार दिखती है। सामान्य मनुष्य जो नहीं देख सकते, वह मेरे नीरू माँ को सहज रूप से दिखता है।" उस दिन से मुझे नीरू माँ के प्रति एक अलग प्रकार की भक्ति शुरू हो गई।

रहस्यमयी सफर

(पिछले अंक में हमने देखा कि सरस्वती देवी माँ ने निसर्ग को आगे का रास्ता बताया और अदृश्य हो गईं। निसर्ग थोड़ा आगे गया तो उसे एक दरवाज़ा दिखा, दरवाज़े पर कुछ लिखा हुआ था। निसर्ग ने पढ़ा और अंदर जाने के लिए उत्साहित हो गया!)

निसर्ग ने दरवाज़े पर लिखी हुई सूचना पढ़कर अंदर प्रवेश किया। जैसे ही वह अंदर प्रवेश करने गया तभी उसे एक विशाल सरोवर दिखाई दिया।

निसर्ग घबरा गया, "अब आगे कैसे जाऊँ? मुझे तो स्विमिंग करना नहीं आता"। वह एकदम डर गया। तभी उसे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर रखे हुए बड़े-बड़े पत्थर दिखाई दिए। पत्थरों पर लिखा हुआ था, "चाबी लेकर ताला खोलो।"

"एक विशेष शंख में मिलेगी चाबी, लाइफ जैकेट पहनकर करो ढूँढने की तैयारी।"

"चाबी कैसे मिलेगी? अब मैं क्या करूँ?" निसर्ग को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसने कुछ भी सोचे बिना पहले वाले पत्थर पर पैर रखा। पैर रखते ही पत्थर हिलने लगा और

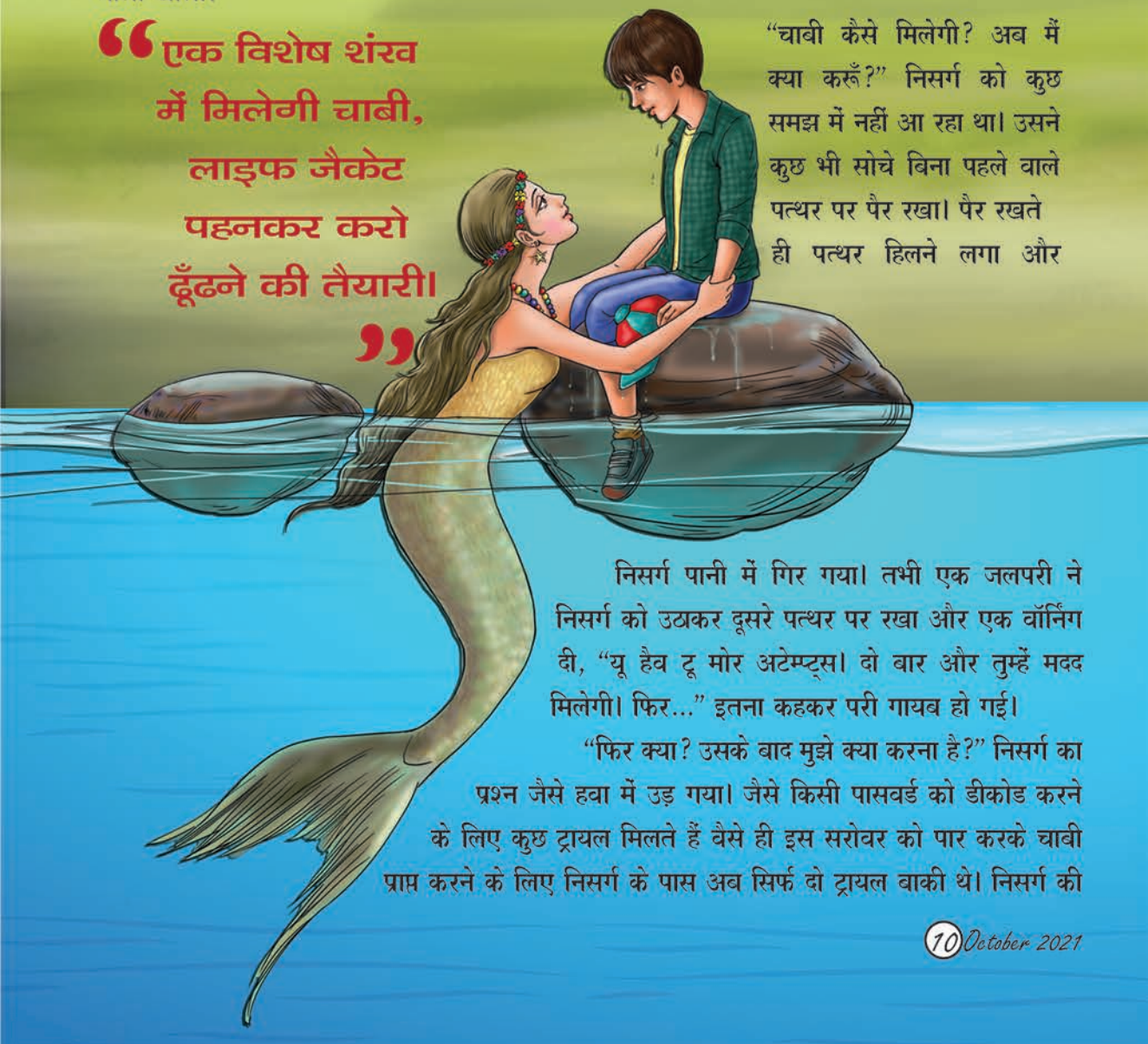

निसर्ग पानी में गिर गया। तभी एक जलपरी ने निसर्ग को उठाकर दूसरे पत्थर पर रखा और एक वॉर्निंग दी, "यू हैव टू मोर अटेम्प्ट्स। दो बार और तुम्हें मदद मिलेगी। फिर..." इतना कहकर परी गायब हो गई।

"फिर क्या? उसके बाद मुझे क्या करना है?" निसर्ग का प्रश्न जैसे हवा में उड़ गया। जैसे किसी पासवर्ड को डीकोड करने के लिए कुछ ट्रायल मिलते हैं वैसे ही इस सरोवर को पार करके चाबी प्राप्त करने के लिए निसर्ग के पास अब सिर्फ दो ट्रायल बाकी थे। निसर्ग की

घबराहट बढ़ गई। दूसरे पत्थर पर पैर रखने में भी उसे असफलता मिली। फिर एक बार जलपरी ने निसर्ग की मदद की और हँसकर गायब हो गई। निसर्ग थोड़ा रिलैक्स हुआ और सोचने लगा कि, "जब जलपरी मेरी मदद के लिए आती है तब मैं बिल्कुल शांत होता हूँ और पत्थर पर आराम से बैलेंस रख पाता हूँ। घबराहट में मैं गिर जाता हूँ। अब मैं शांत रहकर बैलेंस रखने का ट्राय करता हूँ।"

निसर्ग ने स्थिरतापूर्वक पत्थर पर पैर रखा। देखा तो पत्थर स्थिर और निसर्ग भी स्थिर! इस तरह निसर्ग घबराए बिना, बैलेंस रखकर, एक के बाद एक पत्थर पर पैर रखता गया और धैर्यपूर्वक सरोवर पार किया।

निसर्ग सोचने लगा, "यह तो कितना ईज़ी था! मैंने ही घबराहट में इसे कठिन इमेज़िन कर लिया था। इसका मतलब, जो काम बिना घबराहट के करते हैं वह आसानी से पूरा हो ही जाता है!"
ऐसा सोचते ही निसर्ग के पीछे वाला सरोवर गायब हो गया और सामने वाला दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

"यह क्या, चाबी के बिना ही ताला खुल गया?" एक तरफ निसर्ग ने सोचा और दूसरी तरफ जलपरी जवाब लेकर हाज़िर हो गई।

परी ने कहा, "तुम्हारी सच्ची समझ ही ताला खोलने की चाबी है! अब तुम्हारे जैसे ही एक साथी के साथ वॉटर टनल पार करने के लिए तैयार हो जाओ।"

'साथी?!!' निसर्ग आगे कुछ सोचे उससे पहले ही उसे अपनी उम्र का एक लड़का दिखा।

उस लड़के को देखते ही निसर्ग की बुद्धि ने दख़ल किया, "इससे थोड़ा पतला साथी होता तो टनल ईज़िली पार कर पाते।"

निसर्ग की उलझन देखकर जलपरी ने उससे पूछा, "तुम्हें कोई प्रॉब्लम है क्या?"निसर्ग झूठ बोलने जा ही रहा था तभी उसे सरस्वती माता को दिया हुआ वचन याद आ गया कि वह हमेशा सत्य बोलेगा। व चन याद आते ही वह चुप रहा।

निसर्ग टनल में आगे बढ़ने के लिए अपने साथी के साथ चलने लगा। लेकिन अनजान साथी के साथ वह तालमेल नहीं बना पा रहा था। एक कुछ कहे और दूसरा कुछ समझे। निसर्ग को इरिटेशन होने लगा, "यह मेरी बात समझता क्यों नहीं है! ऐसे पार्टनर के साथ टनल क्रॉस करना इम्पॉसिबल है!" तभी उसके मन में एक विचार कौंधा, "नहीं-नहीं, मैं हार नहीं मानूँगा। मैं जिनसे मिलने आया हूँ, उनसे मिले बिना नहीं जाऊँगा।"

निसर्ग ने दो मिनट के लिए आँखें बंद की और गहरी साँस ली। फिर उसने अपने पार्टनर के साथ टनल क्रॉस करने के आइडियाज़ शेयर किए और पार्टनर के आइडियाज़ भी सुने। दोनों ने साथ मिलकर एक प्लान बनाया और आसानी से टनल पार कर ली। "वाउ, टीमवर्क और एडजस्टमेंट से काम कितना

सिंपल हो जाता है!" यह विचार आते ही टनल और पार्टनर दोनों गायब हो गए और सामने वाला दरवाज़ा खुल गया। यह थी समझ की दूसरी चाबी, जो निसर्ग ने हासिल की थी।

दरवाज़ें में से निकलने के बाद आगे बढ़ने पर निसर्ग को एक विशाल समुद्र दिखाई दिया। समुद्र की लहरें ऊपर हवा में उछलीं और पानी शब्दों में बदल गया। शब्द थे - "एक विशेष शंख में मिलेगी चाबी, लाइफ जैकेट पहनकर करो ढूँढने की तैयारी।" और शब्द फिर से लहरें बनकर समुद्र में समा गए।

एक परी ने आकर निसर्ग को एक लाइफ जैकेट दिया और कहा, "यह जैकेट पहनकर तुम समुद्र की गहराई में जा सकते हो, डूबने का खतरा नहीं है।"

जैकेट पहनकर निसर्ग फिर एक चाबी ढूँढने के लिए तैयार हो गया। उसने समुद्र में डुबकी लगाई। थोड़े प्रयत्न करने के बाद एक शंख हाथ में आते ही निसर्ग खुश हो गया। लेकिन समुद्र से बाहर निकलकर देखा तो शंख खाली था! समय बिगाड़े बिना उसने फिर से एक डुबकी लगाई। थोड़ी देर और मेहनत करने के बाद स्टार फिश के आकार का एक शंख मिलने पर उसके मन में आशा जाग उठी। बाहर आकर देखा तो, यह क्या!! फिर वही निराशा!

तभी उसे किसी की आवाज सुनाई पड़ी... 'निसर्ग, तू यह नहीं कर पाएगा। तुझसे एक भी काम अच्छी तरह नहीं हो पाता। तू जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाएगा।'

शंख ढूँढने के लिए फैलाए हुए हाथ निसर्ग ने अपने कानों पर रख दिए। घर में और स्कूल में रोज़ ऐसे शब्द सुनने की आदत की वजह से उसके कानों को यह समझते देर नहीं लगी कि यहाँ भी लोग उसे कहने का मौका नहीं छोड़ते। चाबी नहीं मिलने की निराशा से भी अधिक निराशाजनक और आगे बढ़ने से रोके, ऐसे ये शब्द थे।

निसर्ग चाबी ढूँढना छोड़ दे उससे पहले ही उसे ऐसी अनुभूति हुई कि यहाँ कोई ऐसी शक्ति है जो उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही है। उस शक्ति के प्रभाव से उसने नापसंद शब्दों को एक ही पल में दूर फेंककर दुगने उत्साह से डुबकी लगाई।

और आश्चर्य, इस बार एक चमकीला शंख निसर्ग के हाथ लगा। जिसे खोलते ही सुनहरी किरणें चारों ओर फैल गईं। इस बार निसर्ग को एक सुनहरी चाबी मिली। पहली बार निसर्ग को समझ में आया कि चाहे कोई हमारे काम में दख़ल करके हमारी गलतियाँ निकाले, नापसंद शब्द कहे, लेकिन यदि हम अपना आत्मविश्वास डिगने ना दें तो हमें ज़रूर सफलता मिलती है।

चाबी हाथ में लेते ही निसर्ग ने मन में बहुत हल्कापन महसूस किया। पीछे मुड़कर देखा तो समुद्र गायब हो गया था। और सामने देखा तो एक दरवाज़ा दिखाई दिया। उसने चाबी से दरवाज़ा खोला तो साक्षात अंबा माता प्रकट हुईं।

अंबा माता को देखते ही निसर्ग ने सहजता से उन्हें नमन दिया। उसे खुद को आश्चर्य हुआ कि मम्मी के कितनी बार टोकने पर भी कभी किसी मंदिर में नहीं जाने वाला या किसी को नमन नहीं करने वाला आज इतना सहज किस तरह हो गया है!

मानो अंबा माता निसर्ग की उलझन समझ गई हों। उन्होंने उसे अपने नज़दीक बुलाया और पास बैठाकर सिर पर हाथ घुमाया। माता का हाथ घूमते ही उलझा हुआ, अकुलाया हुआ, गुस्से से भरा, चिड़चिड़ा मन बिल्कुल शांत और खाली हो गया। माता निसर्ग के सामने देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रही थीं। और निसर्ग कभी भी न हल हो सके ऐसे प्रश्नों को पल भर में ही हवा में बिखरते हुए देख रहा था।

माता का आशीर्वाद प्राप्त करके निसर्ग धन्यता अनुभव कर रहा था। उसे माता के पास से हटने की इच्छा तो नहीं थी, लेकिन उसे अभी और आगे का सफर तय करना बाकी था। माता का आशीर्वाद लेकर वह आगे जाने के लिए तैयार हो गया। उसने थोड़ी देर के लिए आँखें बंद की और उसने जो समझ रूपी चाबियाँ प्राप्त की थी उसे याद करने लगा। फिर आँखें खोली तो नज़र के सामने से सबकुछ गायब हो गया था।

खुशी मन से निसर्ग आगे बढ़ने लगा। आगे जा कर उसे एक हीरा, रत्न जड़ित दरवाज़ा दिखा।

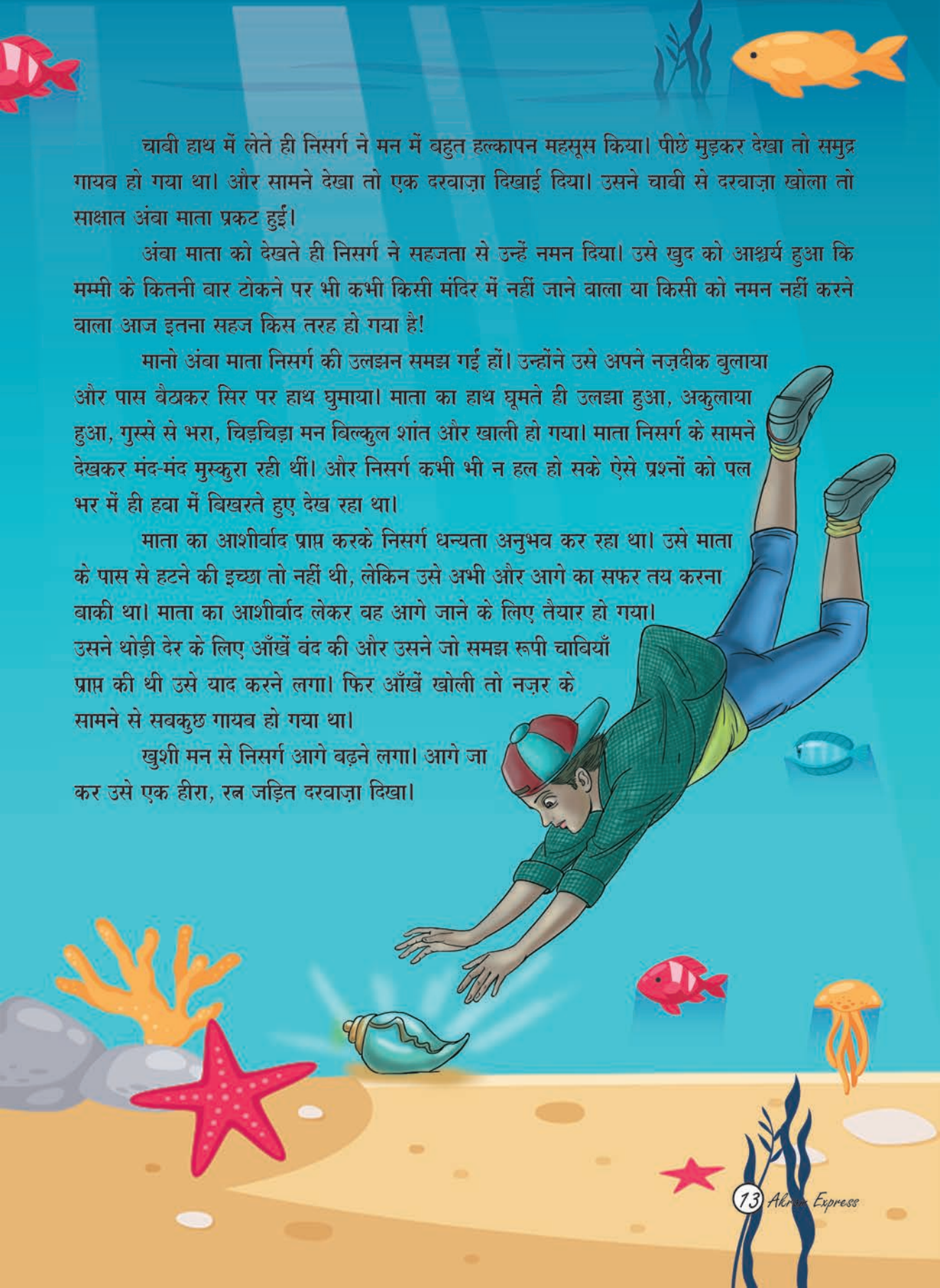

दो अंडे

भौमिक और भास्कर नाम के दो राजकुमार मित्र थे। एक बार वे बगीचे में घूमने निकले। बगीचे में टहलते समय उन्हें दो सुंदर अंडे दिखे।

"ये किसके अंडे हैं?" राजकुमारों को अंडे देखकर उत्सुकता हुई।

राजकुमार के अंगरक्षक ने बताया कि ये मोर के अंडे हैं।

दोनों मित्रों को मोर के अंडे अपने महल में ले जाने की इच्छा हुई। दोनों मित्रों ने एक-एक अंडा बाँट लिया और अंडे को अपने महल के तबेले में रखवा दिया।

इस तरह, एक अंडा सेने का काम भौमिक के यहाँ और दूसरे का भास्कर के यहाँ मुर्गी के अंडों के साथ हो रहा था।

भौमिक बार-बार सोचने लगता कि, "मुर्गी के अंडों के साथ रखे मोर के अंडे में से मोर निकलेगा या नहीं?" भौमिक हर दूसरे दिन तबेले में जाकर अंडे को हिलाकर देखता। वह अंडे को इधर-उधर घुमाकर देखता। इस तरह कई बार दख़ल करने से अंडा निर्जीव हो गया। अंडे को निर्जीव हुआ देखकर उसे बहुत दुःख हुआ। वह निराश हो गया, "अब मुझे मोर के साथ खेलने नहीं मिलेगा।"

दूसरी ओर, भास्कर को विश्वास था कि सही समय आने पर अंडे में से मोर ज़रूर निकलेगा। इस विश्वास के कारण उसने कभी भी दख़ल नहीं की। ना ही उसने कभी अंडे को हिलाया और ना ही कभी घुमाया। उसने धीरज रखा, जिसके परिणाम स्वरूप सही समय आने पर उस अंडे में से मोर का बच्चा निकला।

फिर भास्कर ने सावधानीपूर्वक बच्चे को पाला। थोड़े ही दिन में भास्कर का मोर नाचने लगा और कूजन करने लगा। मोर रोज़ अपने सुंदर पंखों से भास्कर को खुश कर देता।

मित्रों, क्या हम भी अपनी लाइफ में भौमिक की तरह दख़ल करते हैं? "मैंने पेपर में जो लिखा है उसे टीचर ठीक से चेक करेंगे या नहीं? "पिज़्ज़ा डिलीवरी में इतनी देर क्यों लग रही है?" "मुझे वह चीज़ अभी के अभी चाहिए!" ऐसी दख़ल करने से कभी कुछ फायदा हुआ है? नहीं! हमेशा भौमिक की तरह अंत में निराश होने की ही बारी आती है। ठीक है न? तो चलो, तय करें कि भास्कर की तरह दख़ल किए बिना धीरज से काम लेंगे और परिणाम स्वरूप आनंद का अनुभव करेंगे!

टीटो और पोज़ी

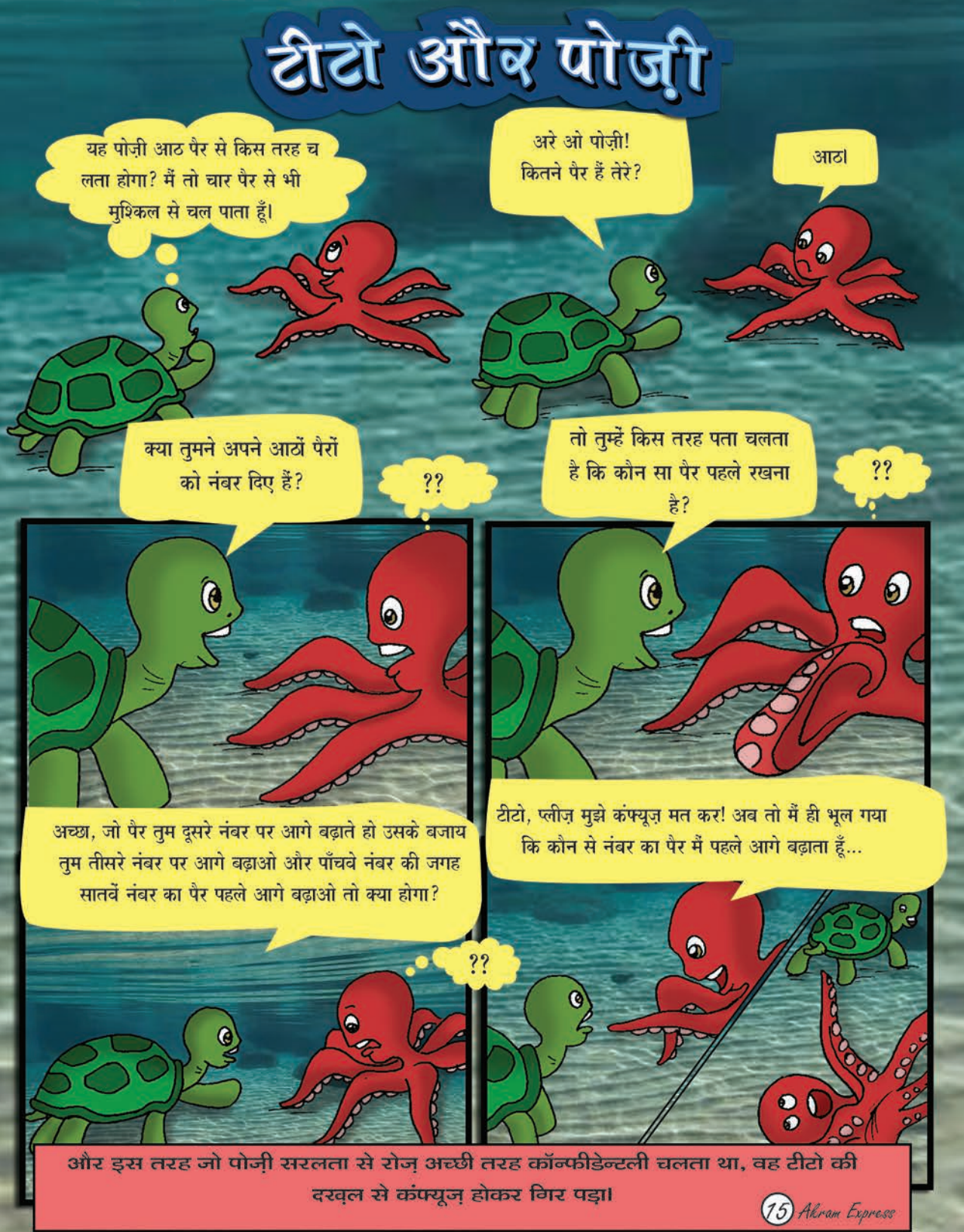

और इस तरह जो पोज़ी सरलता से रोज़ अच्छी तरह कॉन्फीडेन्टली चलता था, वह टीटो की दख़ल से कंफ्यूज़ होकर गिर पड़ा।

चिकी मंकी

चिकी मंकी और जंबो हाथी पकड़म-पकड़ाई का खेल खेलते-खेलते एक अनजान वन में पहुँच गए।

जंबो- देख चिकी, मैं तुझसे अधिक फास्ट दौड़ सकता हूँ। दौड़ते-दौड़ते जंबो पत्तों से ढके हुए एक कुएँ में गिर गया।

हेल्प! हेल्प! चिकी मेरी हेल्प कर। मैं कुएँ में गिर गया हूँ।

ओह! तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हें अभी बाहर निकालता हूँ।

क्या करूँ? क्या करूँ? आइडिया!

चिकी पेड़ की एक बड़ी डाली ले आया। उसने डाली को कुएँ में फेंका।

जंबो इसे पकड़ लो। मैं तुम्हें बाहर खींच लूँगा।

रियली?

हाँ, हाँ... चल, रेडी? वन, टू, एन्ड...

चिकी ने बहुत ज़ोर लगाकर डाली ऊपर की ओर खींची...

एन्ड थ्री...ईईईईईईईईई

चिकी गिरा नीचे और जंबो निकला कुएँ से बाहर...

थैंक यू सो मच, चिकी। यू सेव्ड मी।

यह बात जंबो ने जब अपने फ्रेन्ड्स से कही तब कोई मान ही नहीं रहा था।

इट इज़ नॉट पॉसिबल!

कोकोनट लिफ्टिंग गेम में तो चिकी टेन कोकोनट्स भी उठा नहीं पाता। तो इतने भारी जंबो को कुएँ में से बाहर कैसे निकाल सकता है? इम्पॉसिबल!

इट इज़ पॉसिबल!

कैसे?

किसी भी गेम में, "चिकी, तुम यह नहीं कर पाओगे", ऐसा कहने वाले चिकी के बहुत सारे फ्रेन्ड्स हैं। इसलिए चिकी वास्तव में वह नहीं कर पाता।

लेकिन उस सुनसान वन में ऐसा कहने वाला कोई था ही नहीं कि, "चिकी तुम जंबो को बाहर नहीं निकाल पाओगे।" चिकी ने फुल प्रयत्न किया और वह सफल हुआ।

यदि किसी भी काम में दख़ल न की जाए तो वह काम सफलता से पूरा हो सकता है। राइट चिकी?

एब्सल्यूटली राइट, सर!!

तो देखा मित्रों, टीटो की दख़ल से पोज़ी कंफ्यूज़ हो गया और दूसरी ओर चिकी मंकी को किसी की दख़ल ने नहीं रोका तो वह कठिन काम भी सरलता से कर पाया। हमारे काम में कोई दख़ल करता है तो हमारा काम बिगड़ जाता है। तो, हमें भी कभी किसी के काम में दख़ल नहीं करनी चाहिए। ठीक है न?

अंबा माँ नी आरती

ॐ जय जगदंबे माँ, ॐ जय अंबे माता,
आरती तारी उतारी, (२) शक्ति साधु सदा। ..... ॐ जय

आद्यशक्ति स्वरूप छे तू, प्राकृतिक देवी, (माँ) (२)
सहज प्रकृति थाती, (२) भजना तुज करता। ..... ॐ जय

मृदुता-ऋजुता पामे, हृदयस्पर्शी भाषा, (माँ) (२)
त्रियोगे अहिंसक थई, (२) सुख-शांति देता। ..... ॐ जय

नेमिनाथना शासन देवी, सर्व धर्मे मान्या (माँ) (२)
मोक्षगामीना विघ्नों, (२) सहेजे दूर करतां। ..... ॐ जय

पुरुष अने प्रकृतिनां भेदों, ज्ञानी थकी भेदाय (माँ) (२)
भेद पछीनी भक्तिथी, (२) प्रकृति छेदाय। ..... ॐ जय

तारा रूपमाँ भालुं, दुर्गा-काली महा, (माँ) (२)
बहुचर-खोडीयार माँने, (२) पाँचागुली-पद्मा। ..... ॐ जय

दिलथी तारी आरती, जे कोई गाशे, माँ (२)
अभ्युदय फल पामी, (२) आनुषंगिक वरशे। ..... ॐ जय

Akram Express

October 2021
Year : 11, Issue : 6
Conti. Issue No.: 103

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

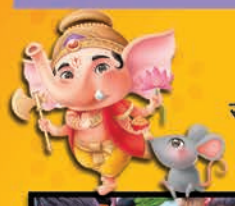

गणपति बापा मोरिया...

सीमंधर सिटी सेन्टर के लीट्ल और बेबी एम.एच.टी के बच्चों ने किया गणेशचतुर्थी का सेलिब्रेशन!!!

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025